रत्नेश्वर मिश्र

'डॉ० रत्नेश्वर मिश्र इतिहासकार पहिने भेलाह, मैथिली साहित्यक रचनाकार बादमे। हिनक जन्म पूर्णिया जिलाक विष्णुपुर गाममे 1 फरवरी, 1945 कँ भेल छनि। ई मैट्रिकुलेशन कयलनि नेतरहाट विद्यालयसँ। एम. ए. आ पी-एच. डी. कयलाक बाद इतिहासक विद्वान प्राध्यापकक रूपमे हिनक ख्याति भेलनि। ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगामे इतिहासक युनिवर्सिटी प्रोफेसर आ विभागाध्यक्षक पदसँ 2005 ई0 मे सेवा-निवृत भेलाह अछि।

रत्नेश्वर मिश्रकेँ साहित्यसँ अभिरुचि प्रारम्भे सँ छनि। इतिहास आ साहित्य-दुनू क्षेत्रमे हिनक रचनाक पुस्तकाकर प्रकाशन कम छनि, मुदा जतेक छपल छनि से पर्याप्त छनि। इतिहासकारक रूपमे मिथिला आ नेपाल पर हिनक लेखन गहन विमर्शक विषय बनल अछि। साहित्य अकादेमी, नयी दिल्लीसँ प्रकाशित भवभूति, तमिल साहित्यक इतिहास आदि अनुवाद - पोथी बेस प्रशंसित भेल अछि। हालेमे हिनक सुरेन्द्र झा सुमन लिखित मैथिली उपन्यास 'उगनाक दयादवाद' क अंगरेजी अनुवाद प्रकाशित भेल अछि। मैथिलीमे निबन्धकार, समीक्षक आ अनुवादकक रूपमे हिनक प्रसिद्धि छनि।

प्रस्तुत निबन्धमे रत्नेश्वर मिश्रक इतिहासकार आ साहित्यकारक समन्वित रूप ध्येय अछि। स्वतंत्रता संग्रामक इतिहास जानब, अपन देशक संविधानसँ संक्षेपोमे परिचित होयब प्रत्येक छात्रक कर्त्तव्य थिक। सोझ सरल भाषामे आधिकारि विद्वान एही आवश्यकताकेँ बुझि रखलनि अछि।

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम एवं संविधानक रूपरेखा

स्वतंत्रता मानव जातिक जन्म सिद्ध अधिकार थिक। एकरा प्राप्त करबाक लेल एवं सदा सुरक्षित ओ निरापद रखबाक लेल महान् बलिदान ओ त्यागक आवश्यकता होइत अछि। जे राष्ट्र एहि प्रकारक बलिदान ओ त्याग कऽ सकल सैह स्वतंत्रता प्राप्त कऽ सकल अछि आ अपन स्वतंत्र जीवन बिता रहल अछि।

कालक गतिमे भारत अतीत कालमे अपन अनेक दुर्बलताक कारणे अपन स्वतंत्रता गमा बैसल। किन्तु ताही संग विदेशी सत्ताकेँ उखाड़ि कऽ फेकि देबाक सेहो निरन्तर संघर्ष चलैत रहल। किन्तु ओ संघर्ष संघटित जन संघर्ष नहि बनि सकल।

सामूहिक जनसंघर्षक रूपमे विद्रोहक पहिल ज्वालामुखीक विस्फोट भेल छल 1857 इसवीमे। एकरा सिपाही-विद्रोह कहल जाइछ मुदा ई छल भारतीय स्वतंत्रता संग्रामक आदम्ब इच्छाशक्तिक अभिव्यक्ति। एक मइ 1857 मे मेरठक सैनिक छावनीमे अंगरेज सभक विरुद्ध एक सैनिक मंगल पाण्डे द्वारा दागल गेल बन्दूकक अबाज दिल्लीसँ कलकता धरिक इस्ट इंडिया कम्पनीक सैनिक छावनीकेँ दलमलित कऽ देलक। सर्वत्र भारतीय सैनिक अंगरेजक विरुद्ध स्वतंत्रताक बिगुल बजा देल।

मेरठक एहि सिपाही-विद्रोहक चिनगी दिल्ली पहुँचल। बहादुरशाह द्वितीय अपनाकेँ हिन्दुस्तानक सम्राट् घोषित कऽ देलक। सिपाही सबहक मनोबल बढ़लैक। अन्ततः ओ सब दिल्ली पर अधिकार कऽ लेलक। एकरा बाद तँ एहि विद्रोहक लहरि अनेक स्थानमे पसरि गेल। कुँवर सिंह जगदीशपुरमे, रानी लक्ष्मीबाइ झांसीमे तथा नाना साहब कानपुरमे विद्रोहक नेतृत्व कयलनि। एहिना आनो-आनो स्थानमे विद्रोहाग्निकेँ प्रज्ज्वलित कयल गेल। एक वर्षसँ अधिक धरि ई संघर्ष चलैत रहल, मुदा अन्ततः असफल भऽ गेल। संघर्षक हेतु अपेक्षित योजनाबद्ध कार्य-पद्धति, संगठन-शक्ति तथा नेतृत्व-क्षमताक अभावमे विद्रोह अपन अभीष्ट धरि नहि पहुँच सकल। तइयो विद्रोही सभक साहस एवं इच्छाशक्तिक दृढ़ता प्रशंसनीय छल। विदेशी शासनसँ लड़बाक लेल जनमानसकेँ तैयार करबाक दृष्टिकोणसँ एकर विशेष महत्व अछि। ओना, विदेशी शासक

प्रति लोकक मनमे क्षोभ आ घृणा पहिनेसँ छलैक, मुदा ओ मुखर भेल एही विद्रोहक अवसर पर।

1857 क विद्रोह भने असफल भऽ गेल हो, मुदा सम्पूर्ण देशमे राजनीतिक चेतना जगयबामे ओ सफल रहल। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना जागृत राजनीतिक चेतनाक परिणाम छल। दिसम्बर, 1885 मे किछु राजनीतिक कार्यकर्त्ता सभ एकत्र भेलाह आ एहि राष्ट्रीय संस्थाक न्यों रखलनि। अवकाश-प्राप्त अंग्रेज आइ० सी० एस० अधिकारी ए० ओ० ह्यूम कांग्रेसक स्थापना कयनिहार प्रमुख व्यक्ति छलाह। विदेशी शासक विरुद्ध बढ़ैत जनाक्रोशकेँ जे युवाशक्ति नेतृत्व प्रदान कऽ रहल छल तकरा संगठित कऽ अपना ढंगेँ उपयोग करबाक जे इच्छा ए० ओ० ह्यूमक मनमे रहल होइन, मुदा से भऽ नहि सकलनि। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस राष्ट्रीय एकता आ राष्ट्रवादक भावनाकेँ जगयबामे लागि गेल। कांग्रेसक प्रथम अध्यक्ष डब्ल्यू० सी० बनर्जीक कहब छलनि -"कांग्रेसक उद्देश्य भ्रातृत्व भावसँ भारतीय जनताक मध्य पसरल जाति, वर्ण तथा क्षेत्रीय पूर्वाग्रहकेँ समाप्त करब थिक। देशक लेल काज करयवला लोकमे भ्रातृत्वभाव तथा मैत्री-सम्बन्धकेँ दृढ़ करब सेहो एकर लक्ष्य थिक"। स्पष्ट अछि जे कांग्रेसक तत्कालीन नेता सभक ध्यान जनतामे राजनीतिक चेतना उत्पन्न करबा दिस बेसी छलनि। ओ सभ उपनिवेशवादक विरुद्ध राष्ट्रवादी विचारधाराक विकास पर जोर देब आवश्यक बुझलनि। उनैसम शताब्दीक अंत धरि कांग्रेस एहि पथ पर अग्रसर रहल। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, मदनमोहन मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, फिरोजशाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले आदि राष्ट्रवादी नेता सभक प्रयास आ प्रेरणासँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस संपूर्ण देशमे एकटा आन्दोलनकारी शक्ति आ मंचक रूपमे प्रतिष्ठत भऽ गेल।

बीसम शताब्दीक प्रारंभ बंग-भंग आ स्वदेशी आन्दोलनसँ भेल। अंग्रेज सरकारक 1905 ई0 मे बंगाल-विभाजनक निर्णय प्रशासनिकसँ बेसी राजनीतिक कारणसँ प्रेरित छल। तेँ एकर तीव्र प्रतिक्रिया भेल। बंगाल-विभाजनक विरोध बंगाले धरि सीमित नहि रहल: संपूर्ण देशमे पसरि गेल। विरोधकेँ प्रभावकारी बनयबाक लेल नेता-लोकनि स्वदेशी आन्दोलनक कार्यक्रम चलौलनि। लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, सैयद हैदर रजा, गोपालकृष्ण गोखले, विपिनचन्द्र पाल तथा अरविन्द घोष सदृश नेतागण एहि आन्दोलनक नेतृत्व कऽ रहल छलाह। एहि आन्दोलनक सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिणाम ई भेल जे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस स्वराजक मांग करऽ लागल। कांग्रेसक कलकत्ता अधिवेशन (1906 ई0) में दादाभाइ नौरोजी अपन अध्यक्षीय भाषणमे स्पष्ट

कहलनि जे कांग्रेसक उद्देश्य अपन सरकार गठित करब थिक।

किन्तु, एहि समय धरि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसमे दू विचारधाराक संघर्ष शुरू भऽ गेल छल। किछु लोक नरमपंथी छलाह तँ किछु गरमपंथी। गरमपंथी लोकनि व्यापक जनान्दोलनक पक्षधर छलाह। राजनीतिक स्वतन्त्रताक प्राप्ति हुनक लक्ष्य छलनि आ एहि लेल बहिष्कार आन्दोलनकेँ ओ सभ असहयोग आन्दोलनमे परिणत करऽ चाहैत छलाह। किन्तु, नरमपंथी सभ एहि पक्षमे नहि छलाह। अन्य अनेक बिन्दु पर सेहो मतभेद छल। यैह कारण छल जे 1907 मे सूरत अधिवेशनमे कांग्रेसक विभाजन भऽ गेल। राष्ट्रीय आन्दोलन पर एहि विभाजनक प्रतिकूल प्रभाव पड़ल। नेतालोकनि बादमे एहि तथ्यक अनुभव कयलनि, मुदा ताधरि बहुत-किछु घटित भऽ चुकल छल।

महात्मा गांधीक प्रवेशसँ स्वतंत्रता आन्दोलनकेँ एकटा नव दिशा भेटल। कहल जा सकै अछि जे गांधीजी चम्पारण आन्दोलनसँ भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनमे व्यापक स्तरपर भाग लेब शुरू कयलनि। चम्पारणक किसान पर अंग्रेजक अत्याचार पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल छल। राजकुमार शुक्ल गांधीजीकेँ चम्पारण अयबाक लेल बाध्य कऽ देलनि। गांधीजी "तिनकठिया" पद्धतिक विरोधमे काज करब शुरू कऽ देलनि आ अन्ततः चम्पारणसँ अंग्रेज बगान मालिककेँ भगयबामे सफल भेलाह। तकराबाद ओ गुजरातक अहमदाबाद तथा खेड़ामे आन्दोलन कयलनि। हुनक कार्यपद्धति प्रभावी सिद्ध भेल। तँ 1920 ई0 मे कांग्रेस असहयोग आन्दोलनकेँ स्वीकार कऽ लेलक। गांधीजी असहयोग आन्दोलनक मुख्य पुरोधा छलाह। अंग्रेजक संग असहयोग आ विदेशी वस्तुक बहिष्कार-ई कार्यक्रम सम्पूर्ण देशमे चलऽ लागल आ राष्ट्रीय आन्दोलनकेँ एहिसँ वेश बल भेटलैक। एकरा सविनय अवज्ञा आन्दोलनक पूर्वपीठिका सेहो कहल जा सकैत अछि।

स्वतंत्रता संग्राममे क्रांतिकारी युवकक भूमिका उल्लेखनीय अछि। प्रथम विश्वयुद्ध आ रूसी क्रांतिक बाद भारतमे सेहो क्रांतिकारी आन्दोलनक सूत्रपात भेल। रामप्रसाद विस्मिल अशफाक उल्लाखाँ, शिव वर्मा, जयदेव कपूर, भगत सिंह, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त आ चन्द्रशेखर आजाद सदृश स्वतंत्रता-सेनानी लोकनि क्रांतिकारी कार्यकलापमे विश्वास रखैत छलाह । हिनका सभक बलिदानसँ स्वतंत्रता संग्रामकेँ जे गतिशीलता भेटलैक से स्वराज्यकेँ लग अनबामे सफल भेल।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसमे सेहो बामपक्षक उदय भेल। समाजवादी विचारधाराक अगुआ

5B

बनलाह जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाषचन्द्र बोस। हिनका सभकेँ अनेक बिन्दु पर गांधीजीसँ वैचारिक मतभेद रहनि, तथापि 1936 ई0 आ 1937 ई0 मे जवाहरलाल नेहरू तथा 1938 ई0 आ 1939 ई0 मे सुभाषचन्द्र बोसक कांग्रेस-अध्यक्ष बनब साम्राजवादी विचारधाराक प्रभुत्वक प्रमाण थिक। नेहरू अपन कार्यकारिणी समितिमे आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण तथा अच्युत पटवर्धन सन समाजवादीकेँ रखलनि। बादमे नेहरू आ सुभाषचन्द्र बोसमे सेहो वैचारिक मतभेद भऽ गेल आ बोस स्वतंत्रता संग्रामकेँ क्रान्तिकारी मोड़ देबाक लेल अग्रसर भऽ गेलाह।

द्वितीय विश्वयुद्धक संग भारतीय स्वतंत्रता गतिमे तीव्रता आबि गेल। 1942 ई0 मे "अंग्रेज, भारत छोड़ू" क नारा देल गेल आ अन्ततः अंग्रेजकेँ भारत छोड़हि पड़लैक। भारत स्वतन्त्र भेल आ अपन संविधानक अनुसार शासन-तंत्रक शुभारंभ करबाक अवसर भारतवासीकेँ भेटलनि।

पन्द्रह अगस्त 1947 केँ भारत स्वतंत्र भेल। स्वतंत्र भारतक संविधान बनयबाक लेल संविधान सभाक गठन कयल गेल । ई सभा अत्यन्त व्यापक ओ सम्पूर्ण संविधानक निर्माण कयलक। एहि संविधानक अनुसार 26 जनवरी 1950 केँ भारतीय गणतंत्रक स्थापना भेल।

26 जनवरी 1950 सँ लागू भारतीय संविधान विश्वक प्रायः सर्वाधिक मानवीय आ उदात्त संविधान अछि। वस्तुतः एहि संविधानक निर्मातागण सतर्क रहथि जे भारत सन विशाल आ विविधातापूर्ण देशक संविधान एहन होमक चाही जे तात्कालिक समस्यासभक समाधान मात्र नहि, अपितु स्थायी दिशा निर्देश प्रस्तुत करबामे समर्थ होइक। राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहरि आ विभिन्न देशक अनुभवक सन्तुलित समन्वय कयलेसँ एहन संविधानक निर्माण संभव छल। 395 अनुच्छेद आ 10 अनुसूची वाला लगभग 22 खंडमे विभक्त 400 पृष्ठक भारतीय संविधान एहने अछि।

एक दिस भारतीय संविधान ब्रिटिश कालमे भारतीय शासन लेल पारित विभिन्न अधिनियमक ऋणी अछि तँ दोसर दिस ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, आयरलैंड आदि देशक संविधानक कतिपय विशिष्ट तथ्यकेँ एहिमे स्थान देल गेलैक। संविधान सभामे प्रारूप-समितिक अध्यक्ष डॉ0 भीमराव अम्बेदकर स्पष्टतः स्वीकार कयलनि जे," अपन नवीन संविधानमे जँ कोनो नव बात भऽ सकैत अछि तँ यैह जे ओहिसँ पहिने प्रचलित संविधान सभक त्रुटिक मार्जन कऽ देल जाय अथवा तकरा देशक आवश्यकताक अनुरूप बना लेल जाय।" चारूकात उपलब्ध नीक बातक समायोजनसँ जे विशाल संविधान बनल ताहिमे ब्रिटिश संसदीय

सर्वोच्चता, अमेरिकी संघात्मक व्यवस्था आ स्वतन्त्र आ निष्पक्ष न्यायालय एवं न्यायिक पुनर्निरीक्षणक सिद्धान्त , कनाडाक आदर्शपर संघ आ राज्यक बीच शक्तिक विभाजन, ऑस्ट्रेलियाक देखादेखी संघ आ राज्य दुनूक अधिकार क्षेत्र वाला समवर्त्ती सूची तथा आयरलैंडक अनुसरण करैत राज्य नीतिक निर्देशक सिद्धान्तक व्यवस्था कयल गेल।

निर्मित, लिखित आ सर्वाधिक व्यापक भारतीय संविधान वयस्क मताधिकार तथा एकल नागरिकतायुक्त लोकप्रिय प्रभुसत्ताक सिद्धान्त पर आधारित एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतान्त्रिक समाजवादी धर्मनिरपेक्ष गणराज्यक स्थापना करैत अछि, जाहिमे अल्पसंख्यक तथा पिछड़ल वर्ग सहित सभक लेल मौलिक अधिकार आ सामाजिक समानताक सिद्धान्तक आधारपर एक कल्याणकारी राज्यक स्थापनाक आदर्श प्रस्तुत कयल गेल अछि। भारतीय संविधानक एहि समस्त विशिष्टताक उल्लेख अन्तिम रूपसँ स्वीकृत संविधानक प्रस्तावनामे भेल अछि।

भारतीय संविधान सभा द्वारा निर्मित संविधानक विशिष्टतासभक उल्लेख एकर प्रस्तावनामे भेल अछि। वर्त्तमान भारतीय राजनीतिक तथा सामाजिक परिवेशमे प्रस्तावनामे उल्लिखित सामाजिक न्याय, मौलिक अधिकार तथा धर्मनिरपेक्षताक सिद्धान्त विशेष व्याख्याक अपेक्षा रखैत अछि। प्रस्तावनामे नागरिक लेल सामाजिक मात्र नहि अपितु आर्थिक आ राजनीतिक न्यायक बात सेहो कहल गेल अछि। लोकतान्त्रिक व्यवस्थाक संचालन लेल स्वतन्त्रता आ समानता तँ सर्वत्र मान्य रहल अछि, किन्तु भारतीय संविधानमे न्याय पर विशेष जोड़ देल गेल। सामाजिक न्यायसँ अभिप्रेत छल जे मनुष्य-मनुष्यमे जाति, वर्ग, अथवा आन कोनो आधार पर भेद नहि कयल जाय आ प्रत्येक नागरिककेँ उन्नतिक समुचित अवसर उपलब्ध होइक ई राज्यक दायित्व मानल गेल जे ओ दुर्बल वर्गक शोषण रोकय एकर विकास लेल विशेष यत्न तहिना करय हिनक आर्थिक न्यायसँ अभिप्रेत छल उत्पादनक आ न्यायोचित विभाजन आ राजनीतिक न्यायसँ तात्पर्य छल सब नागरिककेँ समान नागरिक आ राजनीतिक अधिकारक प्राप्ति ।

प्रस्तावनामे जाहि दोसर बात पर बल देल गेल से छल नागरिकक विभिन्न प्रकारक स्वतन्त्रता जकरा नागरिकक मौलिक अधिकार कहल गेल। विचार अभिव्यक्ति भाषण स्वनिर्माण आदि महत्त्वपूर्ण नागरिक स्वतन्त्रता अछि तँ मतदानमे भागलेब, प्रतिनिधि चुनाव नवीन निर्वाचनमे प्रत्याशी होयब, सार्वजनिक पद पर नियुक्ति लेल अभ्यर्थी होयब सरकारी नीतिक आलोचना करब आदि राजनीतिक स्वतन्त्रता कहल जाय सकैत अछि। एहि प्रकारक स्वतंत्रताकेँ संविधानमे मौलिक अधिकारक रूपमे परिगणित कयल गेल आ तकर संख्या 7 निर्धारित कयल गेल मुदा बादमे

सम्पत्तिक अधिकारकेँ एहि सूचीसँ हँटाय देलाक कारणे मौलिक अधिकारक संख्या 6 रहि गेल। एहि अधिकार सभक क्रियान्वयनक व्यवस्था तऽ संविधानमे कएले गेलैक अछि, विभिन्न परिस्थितिमे एकरापर प्रतिबन्ध लगयबाक व्यवस्था सेहो कयल गेल छैक। बियालिसम संवैधानिक संशोधन द्वारा अधिकार संग नागरिकक 10 मूल कर्त्तव्य सेहो सूची जोड़ि देल गेल छैक।

प्रस्तावनामे बियालिसम संवैधानिक संशोधन द्वारा एक अन्य महत्त्वपूर्ण वृद्धि धर्मनिरपेक्ष शब्दक कयल गेल छैक। ओना संविधानमे आरंभेसँ साम्प्रदायिक प्रतिनिधि समाप्त कऽ वयस्क मताधिकारक आधार पर संयुक्त प्रतिनिधित्वक पद्धति अपनाओल गेल। वस्तुत: ब्रिटिश शासनकालमे 1909 केर अधिनियम द्वारा साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्वक पद्धति आरंभ कयल गेल छल जकर दुष्परिणाम स्वरूप भारतक विभाजन भेल।

उपर्युक्त सभ प्रावधानक माध्यमसँ वस्तुत: भारतीय संविधान एक लोककल्याणकारी राज्यक स्थापनाक प्रयास कयलक जाहिमे अल्पसंख्ययकक धार्मिक, भाषागत आ सांस्कृतिक हितक रक्षा कयल जा सकय तथा पिछड़ज जाति आ जनजातिक नागरिककेँ राजकीय सेवा, विधान सभा, संसद आदिमे विशेष संरक्षण देल जाइक। संविधानमे दलितोद्धार लेल अनेक अन्य महत्त्वपूर्ण व्यवस्था अछि, जेना संविधानक सतरहम अनुच्छेदमे कहल गेल जे "अस्पृश्यताक अन्त कयल जाइत अछि आ कोनो रूपमे तकर आचरणक निषेध कयल जाइत अछि-एहन आचरण दंडनीय होयत", एही क्रममे नियोजित आर्थिक विकासक अवधारणाक प्रावधान कऽ भारतीय संविधान 'समाजवादी समाजक' स्थापनाक नीतिकेँ स्वीकार कयलक। संविधान सभामे प्रस्तावनाक प्रारूप पर विचार होयबाक काल भारतकेँ 'समाजवादी गणराज्य' कहबाक प्रस्ताव कयल गेल छलैक, मुदा तखन ई कहि एकरा अस्वीकार कऽ देल गेलैक जे आर्थिक विकासक नीति मुक्त छोड़ल जयबाक चाही, कहबाक तात्पर्य ई जे भारतीय संविधान आन देशक संविधान सभ जकाँ अपन नागरिक लेल मात्र राजनीतिक कानूनी समानतेटा पर नहि सामाजिक समानता पर सेहो बल दैत अछि।

शब्दार्थ

निरापद - निर्विघ्न

अदम्य - जकरा दबाओल नहि जा सकय

मुखर - स्पष्ट; वाचाल

पराकाष्ठा - अन्तिम सीमा

सर्वाधिक - सभसँ वेशी

मार्जन - शुद्धिकरण

अभिप्रेत - तात्पर्य

प्रावधान - व्यवस्था

अस्पृश्यता - छुआछूत

दुष्परिणाम - अधलाह परिणाम

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) सिपाही विद्रोह कहिया भेल छल ?

(क) 1944 (ख) 1856

(ग) 1857 (घ) 1861

(ii) बंग-भंग आन्दोलन कहिया भेल ?

(क) 1905 (ख) 1906

(ग) 1907 (घ) 1908

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(i) अवकाशप्राप्त अंग्रेज आइ0 सी0 एस0 अधिकारी ..... कांग्रेसक स्थापना कयनिहार प्रमुख व्यक्ति छलाह।

(ii) भारत छोड़ो आन्दोलन ..... ई0 मे भेल।

3. निम्नलिखित वाक्यकेँ शुद्ध / अशुद्ध निर्दिष्ट करू -

(क) कांग्रेसक कलकत्ता अधिवेशनक अध्यक्ष छलाह पं जवाहर लाल नेहरू।

(ख) भारतीय संविधानमे 395 अनुच्छेद अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) भारतीय कांग्रेसक स्थापना कहिया भेल ?

(ii) भारत कहिया स्वतंत्र भेल ?

(iii) संविधान सभामे प्रारूप समितिक अध्यक्षके छलाह ?

(iv) भारतक संविधान लिखित अछि वा अलिखित ?

(v) कोन सैनिक मेरठक सैनिक छावनीमे विद्रोह कयने छलाह ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) भारतीय स्वतन्त्रता संग्रामपर एक छोट निबन्ध लिखू।

(ii) भारतक संविधानक विशेषताक वर्णन संक्षेपमे करू।

(iii) स्वतन्त्रता आन्दोलनमे गांधीक योगदानक उल्लेख करू।

(iv) गरमदल आ नरम दलक की तात्पर्य अछि?

(v) भारत छोड़ो आन्दोलनक वर्णन करू।

6. निम्नलिखित संज्ञासँ विशेषण बनाउ -

अधिकार, राष्ट्र , समूह , घोषणा , शासन

गतिविधि -

(i) एक स्वतंत्रता सेनानीक जीवनवृत्तक वर्णन करू।

(ii) महात्मा गांधीक आन्दोलन संबंधी गतिविधिक संकलन करू।

(iii) मौलिक अधिकारक आवश्यकता पर अपन विचार प्रकट करू।

7. स्वतन्त्र एवं परतन्त्रमे अन्तर स्पष्ट करू।

निर्देश –

(i) गरमदल एवं नरमदल वर्गमे तैयार कराय शिक्षक छात्र लोकनिक बीच वार्त्तालाप कराबथि।

(ii) स्वतन्त्रता आन्दोलनमे भाग लेनिहार महापुरुषक एक सूची बनाउ।

(iii) स्वतन्त्रता आन्दोलनमे प्रेरणादायक कविताक पाठ शिक्षक छात्र लोकनिक द्वारा कराबथि।

(iv) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक संस्थापक ए० ओ० ह्यूमक जीवनी शिक्षक छात्र लोकनिकेँ सुनाबथि।